ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

मुद्दा

तकनीकी विकास एवं पर्यावरण: एक समसामयिक विवेचन

बाबूलाल मीना

पुस्तकालयाध्यक्ष,
एल.बी.एस., राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय,
कोटपूतली (जयपुर) राज- 303108

आज ज्यों-ज्यों मनुष्य ने विकास एवं तकनीक को छुआ है त्यों ही वह अपने लिए गंभीर समस्या के पर्यावरणीय उपाधान भी सृजित कर रहा है। प्रायः देखा गया है कि आज मनुष्य ने अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को सुगम बनाने एवं उनकी पूर्ति के लिए प्रकृति का दोहन किया है। जिसके फलस्वरूप परिस्थितिकी संतुलन डगमगा गया है। आज देखा गया है कि पर्यावरणीय समस्या के कारण दिल्ली जैसे महानगर तक में 'ओड इन वन' जैसी प्रक्रिया अपनायी जा रही है। "पर्यावरण प्रदूषण आज एक विश्वस्तरीय समस्या है जो कि एक विकराल रूप धारण किऐ हुए। यदि वर्तमान में इसके समाधान के कोई ठोस कदम नहीं उठाये गये तो मानव सभ्यता के अस्तित्व पर एक बहुत बड़ा खतरा उत्पन्न हो सकता है जो उसको धूमिल बना सकता है।"[1]

एक प्रकार से मनुष्य आज अपने लिए विज्ञान का एक निबन्ध जो बचपन में लिखा जाता था 'विज्ञान वरदान या अभिशाप' में अभिशाप के रूप में स्थापित कर रहा है। अन्यथा आदिकाल में मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूर्णतया प्रकृति पर आधारित था एवं अपनी आवश्यकतानुसार प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का उपभोग किया करता था लेकिन आज यह मानव इतना स्वार्थमय हो गया कि अब यह प्रकृति का किसी भी रूप में दोहन करने के लिए उतावला है। आज तकनीक ने मनुष्य जीवन को जितना आसान बनाया है उतना ही इस विकास ने मनुष्य को पंगु भी बना दिया है। आज व्यक्ति को यह तक पता नहीं कि घर में शीतल रखने हेतु रखा रेफ्रिजरेटर भी औसतन एक दिन में 30 मिनट तक लेने लायक प्राणवायु ऑक्सीजन को खा जाता है। आज इन्हीं मानव निर्मित प्रदूषण के कारण ओजोन परत तक में छिद्र हो गया है। आज समसामयिक समय में पर्यावरण प्रदूषण पर हमारे देश के नेता एवं नेत्रियॉ किसी का भी ध्यान नहीं है। वे सिर्फ दिन भर जनता को बरगलाकर

वोट लेने की योजनाऐं ही बना रहे होते हैं। जबकि भारतीय संस्कृति तो सदा से प्रकृति नवामि वाले संदेशों से सराबोर रही है। यह तो ''शस्य श्यामलताम्' से ओतप्रोत रही है। इतनी सारी सांस्कृतिक, सामाजिक एवं भौगोलिक विभिन्नता होने के बाद भी प्रकृति संरक्षण का संदेश भारत की सांस्कृतिक धरोहर रही है। तभी तो किसी विद्वान ने सच ही कहा है कि "जीवन की इस आपाधापी में मानव प्रकृति का दोहन तो करता रहा किन्तु उसे प्रकृति को वह धन लौटाना ध्यान नहीं रहा जो उसने प्रकृति से छीना था।"[2]

जबकि प्राचीनकाल में हमारे पुरखे पर्यावरण को संतुलित रखने में वृक्षों के महत्व को पहचानते थे एवं पर्यावरण के संतुलन को बनाऐ रखने हेतु वृक्षों की कटाई पर रोक रखते थे। इतना ही नहीं जो पेड़ प्रकृति पर कम पाये जाते थे उनमें प्रकृति रूपी किसी देवता का वास निर्धारित करके उन वृक्षों को संरक्षित करते रहते थे। इतना ही नहीं आज भी राजस्थान में खेजड़ी जैसे बहुत सारे वृक्ष है उनके संरक्षण को बनाये रखने हेतु उसको लोगों की आस्था से जोड़ा गया जिससे आस्था भी सिद्ध हुई व पर्यावरण संरक्षण भी हो गया। हमारे वेद पुराणों में भी वृक्षों के महत्व को स्वीकारा गया है। महर्षि वेद व्यास ने महाभारत में एक स्थान पर लिखा है कि ''पुष्पितः फलवश्च तर्यततीय मानवान्। वृक्षदं पुत्रवम् वृक्षस्तारयंति तत्र तू।"[3] लेकिन आज हमारे स्वार्थलोलुप पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव स्वरूप तकनीक के ज्ञान से सराबोर होने के बावजूद भी आज पर्यावरण का कुछ भी ख्याल नहीं रखा जाता वरन् पर्यावरणीय संरक्षण की सरेआम धज्जियॉ उडाई जाती है। आज हमारे नेता-नूती भी पर्यावरण संरक्षण का ढकोसलावाद करते हैं एवं अगर कहीं संदेश भी देंगे तो सिर्फ कैमरे के सामने आदर्शवादी कामना वाली पर्यावरण संरक्षण की बातें करते हुऐ इति श्री कर लेंगे।

अतः समय रहते हमें तकनीकी एवं विकास की बारिकियों का विवेचन करके विकास को गले लगाये नहीं तो कुछ पर्यावरणीय नुस्खे सिर्फ किताबों में पढ़कर ही संतोष कर लेंगे। आज भूगर्भिक जल का स्तर भी काफी नीचे चला गया है क्योंकि इस तकनीक ने सिर्फ दोहन करने की कला तो विकसित कर ली लेकिन संरक्षण के बारे में लोगों को तत्समय जागृत नहीं किया एवं जल के परम्परागत जल स्रोतों को अतिक्रमण की भेंट चढ़ाते रहे एवं उनके बहाव व भराव क्षेत्र तक को भी मानव जनसंख्या से आरूढ़ित कर लिया। आज अत्यधिक वानिकी आदि से भी मृदा प्रदूषण बढ़ा है। आज प्रायः कृत्रिम खाद के प्रयोग करने व अत्यधिक पैदावार के चक्र में इस तकनीक ने लोगों के जीवन से खिलवाड़ करना शुरू कर दिया है जबकि "मौसम व जलवायु पर निर्भर भारत की खाद्यान्न की मात्रा भी जलवायु पर निर्भर है। विशेष रूप से भारत जैसे देश में...जबकि बहते प्रदूषण की मार मानसून के आने पर पड़ रही है...वृहद पैमाने पर अकाल प्रायः सूखा, बाढ़ एवं महामारी के कारण ही पड़ते हैं।"[4]

इसलिए समय रहते तकनीक के नफे, नुकसान को समझना होगा एवं स्वस्थ राष्ट्र की संकल्पना के लिए तकनीकी व पर्यावरण के समसामयिक विवेचन पर दृष्टिपात करते हुए सरकार का ध्यान आकृष्ट करना होगा जिससे सरकार कोई ठोस कदम उठाये एवं कोई नीति बनाये ताकि देश के नागरिक स्वस्थ-स्वास्थ्य की कामना संजो सके।

संदर्भ :

1. डॉ. एल.एन. वर्मा, डॉ. एल.सी. खत्री, डॉ. मोहम्मद कायमखानी, पर्यावरण अध्ययन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ - 151
2. मनीष श्रीवास्तव, जनसंख्या प्रदूषण एवं पर्यावरण, नमन प्रकाशन-दिल्ली, पृष्ठ -9
3. मनीष श्रीवास्तव, जनसंख्या प्रदूषण एवं पर्यावरण, नमन प्रकाशन-दिल्ली, पृष्ठ-10
4. मनीष श्रीवास्तव, जनसंख्या प्रदूषण एवं पर्यावरण, नमन प्रकाशन-दिल्ली, पृष्ठ-80